श्री काली कवच (पुरुष हेतु)

विनियोग :

श्री दक्षिणकालिका कवचस्य भैरव ऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्री दक्षिणकालिका देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं मम सर्वत: सर्वेभ्य: रक्षणार्थे अज्ञात शत्रु विनाशनार्थे च पाठे विनियोगः ॥

स्तोत्र पाठ आरम्भ :

काली मे पुरतः पातु पृष्ठतश्च कपालिनी ।
कुल्ला मे दक्षिणे पातु कुरुकुल्ला तथोत्तरे ॥ ५॥

विरोधिनी शिरः पातु विप्रचित्ता तु चक्षुषी ।
उग्रा मे नासिकां पातु कर्णौ चोग्रप्रभा मता ॥ ६॥

वदनं पातु मे दीप्ता नीला च चिबुकं सदा ।
घना ग्रीवां सदा पातु बलाका बाहुयुग्मकम् ॥ ७॥

मात्रा पातु करद्वन्द्वं वक्षोमुद्रा सदावतु ।
मिता पातु स्तनद्वन्द्वं योनिमण्डलदेवता ॥ ८॥

ब्राह्मी मे जठरं पातु नाभिं नारायणी तथा ।
ऊरु माहेश्वरी नित्यं चामुण्डा पातु लङ्गकं ॥ ९॥

कौमारी च कटीं पातु तथैव जानुयुग्मकम् ।
अपराजिता च पादौ मे वाराही पातु चाङ्गुलीन् ॥ १०॥

सन्धिस्थानं नारसिंही पत्रस्था देवतावतु ।
रक्षाहीनन्तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ॥ ११॥

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम

तत्सर्वं रक्ष मे देवि कालिके घोरदक्षिणे ।

ऊर्द्ध्वमधस्तथा दिक्षु पातु देवी स्वयं वपुः ॥ १२॥

हिंस्रेभ्यः सर्वदा पातु साधकञ्च जलाधिकात् ।

दक्षिणाकालिका देवी व्यपकत्वे सदावतु ॥ १३॥

-

- इस कवच का 1 हजार पाठ कर सिध्दी कर लें !
- सिद्ध होने पर पुनः अपनी मनोकामना का संकल्प कर इस कवच का एक हजार पाठ करें !
- विशेष संकट में १० हजार पाठ करें!
- घोर अभिचार कर्म का नाश करने हेतु १० हजार पाठ के 4 अनुष्ठान करे...
- निश्चित ही यह कवच कल्याण करता है !

विशेष : कवच पाठ के उपरान्त कवच में स्थित देवियों के लिए हवन कर सकते है I

जैसे :

क्रीं काल्यै स्वाहा,

क्रीं कपालिने स्वाहा,

क्रीं कुल्लायै स्वाहा,

क्रीं कुरुकुल्लायै स्वाहा,

....आदि !

संशोधित :

द्वारा,

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम,

बलुआघाट, जिला - चंदौली - वाराणसी (उत्तर प्रदेश) - 232109

Mo. No.: +91 -7607 233 230 ; **Email :** swamirupeshwar@gmail.com

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम